ये घड़ियां हैं - सम्भल के चलने की

ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू

समय ज्यों-ज्यों समीप आ रहा है, चारो ओर पापकर्म विकराल रूप ले रहा है, चारो ओर नेगेटिव एनर्जी, भ्रष्टाचार, लोभ व अहंकार बढ़ा हुआ नज़र आ रहा है। दानवता सरेआम सिर उठा रही है व मानवता सिर छुपा रही है, व्याधियां बढ़ रही हैं, प्रकृति अपना स्वरूप बदल रही है, प्रेम स्वार्थ की परतों के नीचे ढ़कता जा रहा है। ऐसे में ब्रह्मा वत्सों को संभलकर चलना है।

तुम पालनकर्ता पूर्वज हो

सभी महान ब्राह्मणात्माएं अपने इस श्रेष्ठ स्वरूप को पहचानें। त्रिकालदर्शी भगवान ने हमें याद दिलाया है कि तुम पूर्वज हो, तुम सभी धर्मों की आत्माओं के पूर्वज हो। बहुत महत्वपूर्ण बात तो यह है कि तुम्हारे पुण्य कर्मों का बल सभी धर्मों की आत्माओं को मिलता है, इसलिए तुम्हें उसका पुण्य फल भी पद्मगुणा मिलता है। और यदि पूर्वज आत्माओं से कोई पापकर्म या अपवित्र कृत्य होता है तो उसका प्रभाव भी सभी आत्माओं पर पड़ता है, इस कारण से उसका बुरा फल भी पद्मगुणा उस कर्ता को मिलता है।

कई ब्रह्मावत्स महसूस कर रहे हैं कि अनेकों की स्थितियां बिगड़ती जा रही हैं, इसका कारण यही है कि वे सब व्यर्थ में रहे, उनसे सूक्ष्म पाप होते रहे, उन्होंने साधनाएं नहीं की। तो इसका कोई महत्व नहीं कि कौन लम्बे काल से सेवाओं में है। साधना की कमी, सूक्ष्म अपवित्रता, सूक्ष्म पाप अब उस आत्मा को ईश्वरीय सुख नहीं लेने दे रहे हैं। भगवानुवाच पर सभी ध्यान दें - तुम्हें 63 जन्मों के विकर्म नष्ट करने में समय नहीं लगता, बल्कि संगमयुग पर जो विकर्म होते हैं, उन्हें नष्ट करने में ही मेहनत व समय लगता है।

ये समय स्वयं को कहीं भी उलझाने का नहीं है

सारा संसार कहीं न कहीं उलझता ही जा रहा है। कोई सम्बन्धों में उलझ रहा है, तो कोई काम धन्धों में। किसी को विघ्न-समस्याओं ने हतोत्साहित किया है, तो किसी को अपनों से चोट पहुंची है। कोई टी.वी, इंटरनेट में भ्रमित हो गया है तो किसी को लोभ नचा रहा है। परंतु जिसे सद्विवेक प्राप्त है, जो स्वयं भगवान के स्टूडेंट हैं, जिन्हें समय की पूर्ण पहचान है और जो जन्म-जन्म के लिए ईश्वरीय

समय के महत्व को जानना, श्रेष्ठ विवेक की निशानी है। समय एक बार हाथ से निकल जाए तो हाथ मलने के अलावा कुछ भी हाथ नहीं लगता। यूँ तो चारो युगों में हर घड़ी मूल्यवान है, तो भी इस सृष्टि चक्र में वो समय सर्वश्रेष्ठ है जब स्वयं भाग्य विधाता भगवान धरा पर अवतरित होकर मनुष्यात्माओं का श्रेष्ठ भाग्य निर्माण करते हैं। वो है पुरुषोत्तम संगमयुग। इसी काल के लिए भगवानुवाच है... तुम्हारा एक मिनट एक वर्ष तुल्य है, अर्थात् तुम एक मिनट में एक वर्ष का श्रेष्ठ भाग्य बना सकते हो।

खज़ानों से अपनी झोली भरना चाहते हैं, उन्हें स्वयं को कहीं भी उलझाना नहीं चाहिए।

अतः बुद्धिमानी पूर्वक ऊपर उठ जाएं आप सभी उलझनों से। उलझनें व समस्याएं तो हैं, परंतु स्वयं को उनमें धकेल देना या बाहर निकलना या पूर्णतया अनासक्त, साक्षी व उपराम होकर रहना - ये सब अपने ही हाथ में है। आप कुछ चीज़ों को स्वीकार करके हल्के हो जाएं, कुछ चीज़ों का त्याग कर मुक्त हो जाएं व कुछ बातों में साक्षी होकर न्यारे हो जाएं।

किसी भी बात का या घटना का या परिस्थिति का दुष्प्रभाव मन पर न हो

संभलें आप.... अपने मन को इतना निर्बल न कर दें कि हर बात आप पर अपना दुष्प्रभाव छोड़कर चली जाएं। बातें तो आयेंगी व जायेंगी...यदि आप मुक्त रहेंगे तो वे शीघ्र ही चली जायेंगी, परंतु यदि आप उनके अनेक विचारों में लिप्त हो गये तो वे मन में बैठ जायेंगी। इससे मुक्त होने के लिए हमें निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए - एक है अशरीरीपन का अभ्यास, दूसरा है स्वमान का अभ्यास, इनका बल आपको शक्तिशाली बनायेगा। स्वमान के वायब्रेशन्स के कारण कोई भी बात आपको हल्की लगेगी। साथ ही साथ अपने पास कम से कम 10 ज्ञान की शक्तिशाली प्वाइंट्स नोट करें। वे बातें ऐसी हों - जिन्हें याद करते ही आपका चित्त शांत हो जाए, जिन्हें याद करते ही अपनी शक्तियों की स्मृति आ जाए, जिन्हें याद करते ही स्थिति अचल-अडोल हो जाए। यही सत्य है कि इसके लिए ज्ञान का बल ही चाहिए। परंतु इस बात पर सभी भाई-बहनें ध्यान दें कि स्वयं को प्रभाव मुक्त रखने पर विशेष ध्यान दें अन्यथा इससे संग्रहित शक्तियां नष्ट हो जाती हैं। यदि यह हल्के व निरसंकल्प रहने की नेचर अभी से न बनाई तो विनाशकाल में मन बुरी घटनाओं से बुरी तरह विकृत हो जायेगा।

ये समय है परमात्म प्राप्तियों का व परमात्म वरदानों का

अति-अति कल्याणकारी वरदान स्वयं वरदाता ने अपनी प्रिय संतानों को दिया है। `एक कदम हिम्मत का तुम बढ़ाओ तो हज़ार कदम मैं बढ़ाऊँ'। इसे इस तरह भी याद रखें कि हम थोड़ी भी हिम्मत रखेंगे तो बाबा की हज़ार गुणा मदद प्राप्त होगी। इस वरदान को सवेरे से सारा दिन पांच बार अवश्य याद करें। सवेरे उठने से ही इसे यूज़ करो। उठने का दृढ़ संकल्प करो तो बाबा स्वयं उठायेगा। माया के युद्ध में भी इसे यूज़ करो।

वही समय ईश्वरीय सुख व परमात्म प्रेम प्राप्त करने का है। रोज़ सोते समय अपने प्राणेश्वर पिता को उनसे मिली अनेक प्राप्तियों के लिए सच्चे दिल से धन्यवाद दें। उन्होंने हमें नव जीवन प्रदान किया, हमें सत्य ज्ञान दिया, हमें पावन बनाया, हमारे जन्म-जन्म के प्यार का रिटर्न दिया, उनकी दिल से शुक्रिया करें। मन उसके पुनीत प्रेम में मग्न हो जायेगा।

तो चलें संभलकर, उड़ें हल्के होकर और मग्न हो जाएं परमात्म प्यार में। समय घंटियां बजा रहा है, सुनें...स्वयं भगवान चेतावनी दे रहा है, ध्यान दें। ये समय अलबेलेपन में बिताने का नहीं है।

आज का पुरुषार्थ

``आज का पुरुषार्थ''- आपमें जागृति लायेगा, आपकी सोई हुई शक्तियों को जगायेगा और समस्याओं से मुक्त होने में, स्वयं को परिवर्तन करने में व पुरुषार्थ को तीव्र गति प्रदान करने में ये मददगार साबित होगा। आप प्रतिदिन इसका अध्ययन करके अपने मनोबल में वृद्धि करें।

प्रतिदिन हेतु विभिन्न राजयोग के तरीके भी लिखे गए हैं। इससे योग का विषय आपके लिए आनंदकारी हो जाएगा और व्यर्थ से मुक्त रहने में तथा सहज एकाग्र चित्त होने में आपको मदद मिलेगी। इसलिए प्रतिदिन दृढ़तापूर्वक आप उनका अभ्यास अवश्य करें। हमें पूर्ण विश्वास है कि ये आज का पुरुषार्थ आपके अलौकिक जीवन में सरलता व दिव्यता लायेगा। इसपर चलने से अनेक गूढ़ धारणाएं भी सहज जीवन में अपनाई जा सकेंगी। और राजयोग के मार्ग पर चलने में आपको आनंद आयेगा। जीवन की चुनौतियां आपके मनोबल को बढ़ायेंगी और राजयोग का अभ्यास आपको प्रतिदिन प्रभु-मिलन की सुखद अनुभूति करायेगा। हमारी शुभ-भावना आपके साथ है। - *इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए शान्तिवन के ओमशान्ति मीडिया काउंटर से सम्पर्क करें।*

विरम्हाराजपुर-ओडिशा। सब-कलेक्टर गोपीनाथ सारका को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रणीता।

कैलिफोर्निया-यू.एस.ए.। सैन जोस स्थित फेयरमोन्ट होटल में कम्यूनिटी लीडर्स के लिए आयोजित कार्यक्रम में भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी से आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. सुदर्शन कपूर,फ्रेस्नो, ब्र.कु. आत्मदयाल,मिलपिटास, ब्र.कु. संजय कादावेरू,वाशिंगटन डी.सी.।

वाराणसी-श्रीराम नगर कॉलोनी। भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सरोज। साथ हैं ब्र.कु. ओ.एन. उपाध्याय।

जापान-टोक्यो। जापान, योकोहामा सेवाकेन्द्र पर 'स्वस्थ रहने के लिए सिम्पल लाइफ स्टाईल' विषय पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. डॉ. सविता, ब्र.कु. भाई बहनें व अन्य।

फिरोजपुर कैंट-पंजाब। डिप्युटी कमिश्नर दविन्द्र सिंह खरबन्दा को राखी बांधते हुए ब्र.कु. ऊषा। साथ हैं ब्र.कु. शक्ति।

दिल्ली-सीता राम बाज़ार। ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में डिप्युटी कमिश्नर ऑफ पुलिस परमादित्य, भिन्न-भिन्न पुलिस स्टेशन्स के प्रभारी थानाध्यक्ष, ब्र.कु. सुनीता व ब्र.कु. संगीता।

मऊ-उ.प्र.। बीज अनुसंधान निदेशालय में ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में वैज्ञानिक डॉ. अमित कुमार, ब्र.कु. विमला, ब्र.कु. स्मृति, डॉ. कंचन राय व अन्य।